Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi
amND
1

Hindi RamND 1

13.E.15.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Brahmasārī.

Brahm Sar

ब्रह्मसार ॥

दीनदास प्रसिद्ध नाम मुन्शी रामनारायण कृत

जिसमें

समस्त पुराणों का आशय विशेष कर ब्रह्म भेद अति रुचिर छन्दोंमें सुगम रीतिसे वर्णित है।

वही

ब्रह्मनिष्ठ जनोंके चित्तानन्दार्थ

दूसरीबार

स्थानलखनऊ

मुंशीनवलकिशोरके छापेखानेमें छपा

अक्टूबर सन् १८८२ ई० ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

ब्रह्मसार॥

मंगलाचरण ॥

दोहा ॥ दीनसुखदजगदम्बके चारुचरणहियध्याय ॥
बरणतनृपरघुराज को सुयश बुद्धिबरपाय ॥ १ ॥

भूप रघुराजसिंहजीको प्रताप वो सुयश वो कीर्ति वर्णन ॥

दोहा ॥ धराधराधरतेअधिकधनिश्रीधरनभकीन ॥ सोनृपकीर तिकरणको कलितकंजकबिदीन २ कढ़तपरिघरघुराजके उठहिँ परिघअकुलाय ॥ कँपहिंपरिघआतुरचलहिं रिपुदलपरिघप राय ३ वेदबिदितश्रुतिनीतियुत सकलभूपशुभकाज ॥ महाराज रघुराजकोराजमनहुंरघुराज ४ भयेनपुनिअबहोइहैं जगबिभूति औतार ॥ कलिमेंधनिरघुराजसो प्रभुताजासुअपार ५ बुधजन बोधनहेतुतैं भाष्योव्यासपुराण ॥ भूपतिभाषाजगतको हरतकुम तिअज्ञान ६ ग्रंथरामरसिकावली नृपकृतअमितअपार ॥ जाते जगमेंहोतुहै धनिधनिधर्मप्रचार ७ ॥ कवित्त ॥ आलाधर्मशालाहरि धामरचेग्रामग्राम ठामठामबागऔतड़ागबरबावली । आवैगुणमा नदानमानतौअपारलखि आनँदबढ़ायबुधबाँचैबिरदावली । पावैं सुखद्वारजाकेसज्जनसुसंतआय हरिगुणगायध्यावैं सूरतिहरि साँवली । कीरतिअनन्यधन्यभूपरघुराजतेरि भवसरिजहाजग्रं थरामरसिकावली ८ अवगुणअधर्मअभिमानअधिकानोकलिपाप हरिलीन्होहैसुमतिनरवृंदकी । कोऊपढ़िपारसीसुआरसीनिहारैं

मुखबाहनोनजाहिप्रभुपदअरबिन्दकी। परमअनूपभूपभक्तिअनु-
रागदीन प्रीतिजिमिपदुमपरागपैमलिन्दकी। धर्मकेजहाज राव
राजनकेशिरताज धन्यरघुराजलाजराखीवेदहिन्दकी ९ ब्रह्म
वैवर्तविष्णुबामनबराहब्रह्म अग्निमारकण्डेऔभविष्यतसोहानो
है। लिंगशिवनारदस्कंधपद्मभागवत कूर्मब्रह्माण्डमत्स्यगरुड़
बखानोहै। व्यासकृतसकलपुराणकोप्रमाणदीन तीनलक्षसहस
सतासीजगजानोहै। ताकोसारसुखदसुधासोकाढ़िरघुराज अंबु-
निधिआनँद अपारग्रंथभानोहै १० कोऊहोहिंरूप हरिलीन
रत्नकोऊभयेदीनकोऊलीन्हो हरिराजसुरराजको। सहजसमी
पप्रभुपावैंसुखसाजकोऊ पढ़िपढ़िचरितपुनीतब्रजराजको। यज्ञ
जपदानबहुविद्याकेनिधानभूप राखेराजहिन्दमेंनकाज यमराज
को। ज्ञानअधिकातकलिकलुषनशातसुनि शाखाश्रुतिवेदभाषा
ग्रंथरघुराजको ११ उदितदिगंतनमेंकीरतिविमलभूप उपमा
मरीचीचन्दमन्दकैसेदीजिये। तपतप्रतापनिशिवासर अखंडजासु
तासुसमताईदिवाकरतेनकीजिये। जोपैश्रीकुवेरकीनआवैकाज
काहूंसमतोपैनामलैलैकहाताकोहाथमींजिये। भूपरघुराजदीन
चारोंफलदायकतौ नामअन्तरिक्षकल्पतरुकोनलीजिये १२ सु-
यशसुधासोधन्यभूपरघुराजतेरो गुणदमहीमेंजिमिबारिबरसतु
है। सोईहैधवलधारप्रगटेपुनीतदीन तीनोलोकबीचजासुशोभा
सरसतुहै। दायकअनन्दअम्बुनिधिमेंमिल्योहैजायजाहिपुण्यपूरब
तेनरपरसतुहै। सोईसुखकन्दजगबन्दमन्दमन्दकढ़िपूरणकलाते
बनिचन्ददरसतुहै १३ ॥ दोहा ॥ कलिनृपविक्रमभोजकीकरैप्रशं
साकौन। मिल्योजाहिरघुराजकोधन्यकुंवरसोंभौन १४ लिख्यो
नजासुललाटमेंसुखसंपतिविधिबाम ॥ लेहिंदाहिनोभूपते श्री
सुरेशअभिराम १५ मंगलमयमहिपालको दरशलाभजेहिहोय ॥
दीनतासुत्रैतापअरुपापजातसबखोय १६ हरतगर्बसबकबिनके

नृपरचनाशुभदीन॥नरनहिंतिनकहँजानियेविपुलग्रंथजिनकीन १७कहहिँसदाअतिप्रेमतेहरिचरित्रअभिराम॥कोमलचितजाके बसैसुन्दरमूरतिश्याम १८ हिन्दनृपतिस्वारथलगेमहाराजरघुराज॥ सहजसुयशजिहिँजगलियो करिपरमारथकाज १९ वेदबचनसंसारहित बिदितकियोमहिपाल॥ हरषिसुजनहरिलेतु हैं लघुश्रमपुरसुरपाल २० कोमलचितकोमलबचन दयारूपरघुराज॥ जगयशतौतौलौंबढ़ै जौलौंरविद्विजराज २१ रविसम भूपप्रतापलखि हृदयकमलहरषात॥ हीनक्षीनसकुचातरिपु नित जिमिकुमुदलजात २२ हीरनमोतिनभूषणन भूषितद्वारमतंग॥ करदिनकरछबिदेतजिमि मेघश्यामकेसंग २३ करतबिदिततिहुँ लोकमें निजकीरतिजिमिगंग॥ ललितकलितहियप्रेमतेहरिचरित्रकेसंग २४ रणमहँनृपरघुराजको जीतिसकैजगकौन॥ पद पावनरघुबीरको जासुहृदयशुभभौन २५ नहींदियोऔरहिअमी मथिसागरसुरलोग॥ सुधासुयशरघुराजको हरतजगतभवरोग २६कनकमूठिमणिमयलसैनृपकरकाकरबाल॥ तचीतड़ितकेताप की लखिरिपुहोहिँबिहाल २७ थापरहीश्रुतिवेदकी धनिभूपति केराज॥ रुजपातकअज्ञानता हरहिंसदारघुराज २८ जलनिधि खारोतेकढ़ेसमनज्योतिद्विजराज॥ रहीछायद्युतिरैनिदिन सुयश चन्दरघुराज २९ गगनअवनिपातालमें पूरितयशमहिपाल॥ घुमरतरक्षकछत्रबनि नमदाहिनदिगपाल ३० आदरजेहिदर बारमें सदासुजनअधिकाय॥ राजबढ़ैरघुराजको सुयशरहैजग छाय ३१ जबकीजैसबचरणकेआदिबरणयकठाम॥ यशयुतधनि रघुराजके मिलैदीनमनकाम ३२॥ कवित्त॥जानोजातभालअकवा लतसिकन्दरसों शाहनौशेरवाँसोलखिअतुअदलमें। विद्यातेसुर गुरुसोबिबुधबखानैदीनरुस्तमसोशूरजानैजाहिअरिदलमें। हुकुमतेनादिरअरुहिम्मततेहातिमसो तपतप्रतापधन्यजासुमहि

तलमें। गुणतेबिचारिजाहिजगमेंअनेकजानैसोगुणसोहानेरघु-
राजवेददलमें ३३ ॥

अथ ब्रह्मवर्णन ॥ दोहावली ॥

दोहा ॥ अलखअनादिअनूपहरि ताहिलखैजगकौन ॥ ब्रह्म
भेदबर्णनकरौंध्यायचरणश्रीऐन ३४ यावत्जंगमजीवअरुअस्था
वरकविदीन ॥ सबमेंधनिप्रभुआपनी प्रभाप्रकाशितकीन ३५
कर्मधर्मनिजबरणको गहहुवेदकीरीति ॥ फलेअर्पणहरिकहँकरहु
गहिनिश्चयअरुप्रीति ३६ हृदयबिमलकरिकीजिये इन्द्रिनकहँ
बशदीन ॥ सिद्धिहोहिंसाधनतबै जिमिज्ञानिनबहुकीन ३७ प्र-
थमबिरागबिबेकपुनि समदमइच्छामोक्ष ॥ याहिकर्मसाधनकहैं
जानिबस्तुसबत्वक्ष ३८ निकसेजबअसिब्रह्मते तत्त्वंईश्वरजी
व ॥ मायाइच्छाब्रह्मकी जैसेपयमहँघीव ३९ तेहिमायाकेतीनि
गुण जानहिंसंतसुजान ॥ सतरजतमहैंअतिबली ताकोदेहुंप्रमान
४० मायाएकसतोगुणीजगतसुलच्छितहोय ॥ जानहुताकहँरूप
हरि सकलभर्महियखोय ४१ मायासोइसतोगुणी जाकहँशक्ति
अनंत ॥ हरिशंकरविधिहोतुहैं जानहिंसिगरेसंत४२ मायाजीव
तमोगुणी ज्ञानिनकियोबिचार ॥ जोनहिंजानतआपको भूलेजग
ब्यवहार ४३ ईश्वरकेतनतीनहैं कारणसूक्षमथूल ॥ पृथकरूप
तिनकेकहौंजामेंकछुकनभूल ४४ आदिअन्तजाकोनहीं कारण
कहियेसोय ॥ सुक्षमपाँचौंतत्वपुनिजानतहैंसबकोय ४५ नामतत्व
महिपवनअरुअनलअम्बुआकाश ॥ सोमिलिरूपबिराटहरिबुध
जनकरहिंप्रकाश ४६ नभशिरसूरनिशेषचषभुजाहरीहरदीन ॥
अनलबदनजगउदरविधिहृदयदाढ़्यमकीन ४७ रोमभयेबनअ-
स्थिगिरिचरणजासुपाताल ॥ स्वासापवनसुध्यावहींसुरनरमुनि
महिपाल ४८ तनबिराटहरिकोरहैजौलौंसृष्टिबिरंच ॥ नरतन

जाकेध्यानतेपापरहतनहिँरंच ४९ त्वंपदजीवतमोगुणीमायाबश महंदीन ॥ सात्विकतामसराजसीतातेकहहिँप्रबीन५० जबहिय ज्ञानबिचारते विमलबुद्धिह्वैजाय ॥ ताहिसतोगुणजानिये तम अज्ञाननशाय ५१ जहाँलोभव्यवहारहै ताहिरजोगुणखानि ॥ आलसनिद्रामूढ़तामोहतमोगुणखानि ५२ भ्रमितसदासंसारमें सुधिअपनीबिसराय ॥ जीवसच्चिदानंदहैंविकलतमोगुणपाय५३ मायाएकसतोगुणीविद्याजाकोनाम ॥ जोसबअपनेबशकियोभाव जासुअभिराम ५४ मायाबहुरितमोगुणीऔररजोगुणजानि ॥ जा हिअविद्याकहतुहैं लीजैसोपहिंचानि ५५ पंचकर्मअरुपंचपुनि ज्ञानेन्द्रीबिलगाय ॥ पाँचहिअन्तष्करणके भेदकहौंसमुझाय ५६ येपन्द्रहमनबुद्धिमिलिह्वैसत्रहएकतीर ॥ जगमहँलक्षितहोतुहै सुन्दरसकलशरीर५७बोलनिकरपदलिंगगुदकर्मेन्द्रीपहिंचान ॥ त्वचानयननासाबहुरिरसनाकरणसुज्ञान ५८ प्राणअपानसमान हैंअरुउदानउव्यान ॥ भेदसुअन्तष्करणकेबुधजनकरहिंबखान ५९बोलनिश्रवणअकाशह्वैकरअरुत्वचासमीर ॥ चरणनयनहैं अनलअरुरसनालिंगसुनीर६० गुदनासाकहँजानियेअवनितत्त्व ध्रुवदीन ॥सारसुखदवेदान्तकोबिनुश्रमलखहिंप्रवीन६१ प्राणत- त्वआकाशहैपवनअपानहिंजानि ॥ अम्बुतत्वउव्यानकोजानहुंअन लसमान६२अवनिउदानहिंजानहींसाधकभर्मनशाय ॥ शोधहिं जाकहँयोगबलबुधजननितहरषाय६३पंचप्राणभूतातमाभयेरजो गुणपाय॥निर्णयताकोकरतुहौंहियआनँदअधिकाय ६४ संतर- जोगुणतेकरहिँपंचप्राणअनुमान ॥ जाहिकहहिँभूतातमादैवरवेद प्रमान६५ मनअरुबुद्धिसतोगुणीभाषहिंयोगीलोग ॥ सोप्राणन सँगकरतुहैं जगमहँदुखसुखभोग ६६ सोईपुनिभूतातमा संचित कर्महिंपाय ॥ भोगकरेतनधारिजग मिथ्यासत्यबनाय६७ त्वचा नाटिकारोमअरु मांसअस्थितनमांह ॥ अवनितत्वध्रुवजानियेदे

खिवेदनरनाह६८रेतपित्तप्रस्वेदअरु रुधिरलारजलअंश ॥ प्रभा
नींदआलसक्षुधाप्यासअग्निकोवंश६९ धावनिकूदनिचलनिअरु
सकुचपसारनिशक्ति ॥ पवनतत्ववेमानहीं जाकेहियहरिभक्ति७०
शीशकंठअरुउदरकटिहृदयअंशआकाश ॥ पुनिविभागसबतत्वको
प्रमुदितकरहुप्रकाश ७१ जीवसकलजेहितत्वके आधोगुणनिज
लेत ॥ एकएकगुणऔरलै सुतनदेखाईदेत ७२ जैसेपक्षीउड़तुहै
पवनतत्वनभमांह ॥ अम्बुतत्वजिमिमीनगति हैजलमेंनरनाह७३
मानुषअरुपशुआदिदै अवनितत्वध्रुवजानि ॥ याहीविधिसबतत्व
के जीवलेहुपहिंचानि७४ जीवआपनेतत्वमें सुखीरहतनितदीन॥
अन्यतत्वअस्पर्शते दुखीहोतअरुखीन ७५ संचितऔक्रियमान
पुनि परारब्धकेकर्म ॥ सुजनसंतपरबोधहित कहहुंतासुसबधर्म
७६ संचिततांकहँकहतुहैं जाकेहेतुसुजान ॥ लेनपरैगोजन्मजग
मानहुंबचनप्रमान ७७ इच्छाबिनुइच्छाबहुरि परइच्छाकछुपाय॥
तनदुखसुखकहँजानियेपरारब्धफलभाय७८बुरोभलोनरकरतुहैं
कर्मसोइक्रियमान ॥ हरिशरणनमेंआवहीं जाहिमुक्तिअरमान७९
सत्यकहौंइहजीवकहँ सदानचावतकर्म ॥ तातेअवगुणत्यागिसब
लीजैपंथसुधर्म ८० जातेचितअज्ञानता तुरितदूरिह्वैजाय ॥ ह्वै
किरतारथजीवजग आपुहिब्रह्मलखाय ८१ धनिमायाहरिकीप्र
बलतनअसत्यपरिनाम ॥ सबैसत्यसोलखिपरै बिसरिजातहरि
नाम ८२ षटविकारपरतक्षतन जानतहैंसबकोय ॥ जन्ममरण
बढिबोयुवा वृद्धबालबितहोय ८३ धिकतनमहँदशदोषइह प्रगट
देखाईदेत ॥ एकअशौचअसिद्धपुनि मरतजन्मफिरिलेत ८४ क
ढ़तसदादुर्गन्धअरु खंडखंडसबदेह ॥ शिथिलथूलरोगीबहुरि
अमिषअशनतेनेह ८५ हैंअदोषब्रह्मआतमा सर्वशक्तिचेतन्य ॥ ता
कहंजेपहिचानहीं जीवनताकोधन्य ८६ अन्हुकछुचेतन्यनहिं
ताकोदेहुप्रमान ॥ इन्द्रिनसँगतनमहँरहै शयनमाहँइकथान ८७

चोरउतारहिंबसनतन जानिपरैनहिंताहि ॥ तातेकछुचैतन्यता प्राणहुंकहँनहिंआहि ८८ इन्द्रीजानतस्वादनिज औरनमेंगति नाहिं ॥ मनहुँजहांचैतन्यनहिं तोकिमिभर्मनशाहिं ८९ मनगति इन्द्रिनलोंरहै जानतहैजड़जाहि ॥ बिनुसहायइन्द्रीनके कछुकश क्तिनहिंताहि ९० तातेमनईश्वरनहीं तजहुमूढ़अज्ञान ॥ लखहु तुरितब्रह्मातमा तजिकारणमनमान ९१ अहंकारमनबुद्धिचित चारिनामबपुएक ॥ भेदसुअंतष्करणकेबुधजनकरहिंबिबेक ९२ जानतहैंजहँ आपकोअहंकारसोजानि ॥ निश्चयकरैजोऔरकीबु द्धिलेहुपहिंचानि ९३ तातेमनअरुबुद्धितनएकरूपहैदीन॥अहंकार अरुचित्तकहँ एकहिंलखहिंप्रवीन ९४ देहँपरैइन्द्रीलखहु तासु परैंमनहोय ॥ बुद्धिपरेताकेभई कहहिंसयानेलोय ९५ तासुपरे धनिआतमातनमहँराजतदीन॥ताकेबिमलप्रकाशतेहोहिंतमोगुण क्षीन ९६ विषयभोगइन्द्रीकरैं सुतनथूलजगपाय ॥ पावहिंसुखस बस्वादको मनअरुबुद्धिबनाय ९७ असिपदकहंजलजानिये तत पदसिंधुप्रमान ॥ त्वंपदमानहुंबुन्दहैं तीनोंएकसमान ९८ आज्ञा संतनतेकियो ब्रह्मनिरूपणदीन ॥ बुधजनताहिसुधारिहैं जानि मोहिंमतिहीन ९९ ॥ कवित्त ॥ आठोदलकमलपैबिकलतमोगुणते मनअरुबुद्धिबहुकौतुकलखायोहै। देखेरंगकर्मधायसँगसबइन्द्रिन केचैनचितचंचलमेंनेकुनहिंआयोहै ॥ पूरणभईहैदीनआशापुण्यपूर बते परमउदारद्वारदीनानाथपायोहै ॥ भूपरघुराजरूपसुखदसतो गुणसो सत्यसत्यअशरणशरणसोहायोहै १०० ॥

इतिश्रीब्रह्मसारदीनदासप्रसिद्धनाममुन्शीरामनारायण

अवधबासीकृतसमाप्तः ॥